आर्थिक विकास में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की भूमिका
(Role of International Trade in Economic Development)

विभिन्न देशों के आर्थिक विकास में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों का अध्ययन करते समय इसके महत्व को हम देख चुके हैं। कुछ देशों के आर्थिक विकास और यहाँ तक कि उनके अस्तित्व के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की नितान्त आवश्यकता है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नहीं होता तो विश्व के कुछ औद्योगिक राष्ट्र आर्थिक प्रगति के उस स्तर पर नहीं पहुँचे होते जिस स्तर पर आज वे पहुँच चुके हैं। उदाहरण के लिए हम पश्चिमी यूरोप को ले सकते हैं जो खाद्यान्नों एवं कच्चे पदार्थों के लिए विदेशों पर निर्भर करता है। यदि पश्चिमी यूरोप में अन्य देशों से कच्चा माल इत्यादि नहीं मँगाया जाता होता तो वहाँ औद्योगिक क्रांति कभी नहीं हुई रहती। इस सम्बन्ध में एल्सवर्थ (Ellsworth) ने ठीक ही कहा है- "यदि यूरोप अन्य महाद्वीपों से बढ़ती हुई मात्रा में कच्चे पदार्थ तथा खाद्य-पदार्थ जैसे साधनों को नहीं मँगाता तो वहाँ औद्योगिक क्रांति या तो असंभव रही होती या संकुचित दायरों में नियंत्रित हो गई होती जिसने पश्चिमी यूरोप के उद्योगों को आमूलतः रूपान्तरित कर दिया और 19वीं शताब्दी के अन्त तक इसे विश्व की औद्योगिक कार्यशाला बना दिया और यूरोप के लोगों का जीवन-स्तर उनके वर्तमान जीवन-स्तर का आधा या उससे भी कम रहता"

(Had Europe been unable to draw upon the resources of other continents for a constantly increasing flow of raw materials and food stuffs, the industrial revolution — which transformed its industry and made western Europe by the end of the 19th century the workshop of the world would either have been impossible or restricted within exceedingly narrow limits... European people would be enjoying a standard of living half of that available today or less)

इससे औद्योगिक विकास में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की भूमिका स्वतः स्पष्ट हो जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार केवल विकसित देशों के आर्थिक विकास के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं वरन् अविकसित देशों (underdeveloped countries) का आर्थिक विकास भी बहुत हद तक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर निर्भर करता है। किसी अविकसित देशों में आर्थिक प्रगति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि उसे

Scanned with CamScanner

विकसित देशों से आर्थिक सहायता प्राप्त न हो और वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से ही संभव है। वर्तमान समय मे भारत जैसा अविकसित देश भी इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। हम अपने आर्थिक विकास की योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए विकसित देशों से मानव शक्ति एवं पदार्थों (Men and Materials) का आयात करते है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से रोजगार, मजदूरी एवं आय (Employment, wages and Income) मे वृद्धि होती है जिससे आर्थिक विकास की गति मे तीव्रता आती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे वृद्धि होने से देश के निर्यात को प्रोत्साहन मिलता है। इसके फलस्वरूप निर्यात-उद्योगो मे उत्पादन, रोजगार मजदूरी एवं आय मे वृद्धि होती है जिसका प्रभाव देश के अन्य उद्योगो पर भी पड़ता है और उनमे लगे हुए लोगो की आय भी बढ़ती है और यह प्रक्रिया आगे चलती रहती है। इस प्रकार निर्यात मे वृद्धि के फलस्वरूप आय मे प्रारंभिक वृद्धि विदेशी व्यापार गुणक (Foreign Trade Multiplier) के माध्यम से राष्ट्रीय आय मे कई गुना वृद्धि कर देती है। लेकिन ऐसा कहा जाता है जब देश के आयात (imports) मे वृद्धि होती है तो अनायात उद्योगो (import industries) मे उत्पादन घट जाता है और रोजगार मे कमी आ जाती है। अल्पकाल मे इस परिस्थिति की संभावना से इन्कार नही किया जा सकता लेकिन दीर्घकाल मे श्रमिक प्रशिक्षित होने लगते है और देश आयात-प्रतिस्थापन (import substitution) की चेष्टा करता है जिससे दीर्घकाल मे निर्यात, उद्योगो की संख्या, उत्पादन एवं रोजगार मे वृद्धि होती है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण अल्पकाल मे आयात-उद्योगो मे भले ही थोड़ी बहुत बेरोजगारी उत्पन्न हो लेकिन दीर्घकाल मे उनके रोजगार मे भी वृद्धि होती है।

इस प्रकार हम देखते है कि प्रादेशिक श्रम-विभाजन एवं विशिष्टीकरण, बड़े पैमाने के उत्पादन, विनियोग एवं पूंजीगत उपकरणो की प्राप्ति, प्राकृतिक साधनो का पूर्ण उपयोग एवं विकास, रोजगार, मजदूरी एवं आय मे वृद्धि इत्यादि सभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की देन है। दूसरे शब्दो मे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आधुनिक औद्योगिक एवं आर्थिक विकास का आधार है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किसी देश तथा सम्पूर्ण विश्व के आर्थिक विकास मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

Scanned with CamScanner